PHILOSOPHY

M.A., Paper VII (Sem. II), HONS., Paper VI (Part III)

Trusteeship
(न्यासिता का सिद्धांत)

Dr. S. K. Singh
Mob - 9431449951

→ न्यास धारिता का सिद्धांत मुख्यतः गाँधी के अर्थ संबंधी विचारों का केन्द्र बिन्दु है जो अस्तेय एवं अपरिग्रह से घनिष्ट रूप से संबंधित है। इस सिद्धांत के माध्यम से गाँधीजी जन समुदाय के बीच यह चेतना विकसित करना चाहते थे कि इस जगत की संपूर्ण संपत्ति पर सबका समान रूप से अधिकार है। गाँधीजी का मानना था कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने पास केवल उतनी ही संपत्ति रखे जितनी की उसके लिये आवश्यक हो तो किसी को कोई अभाव नहीं होगा।

→ किसी परिस्थिति में इस आवश्यकता का निर्धारण कैसे करें? इस समस्या का समाधान करते हुये गाँधीजी कहते हैं कि "आवश्यकता वह है जो व्यक्ति के नैतिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के लिये अपरिहार्य हो।" इसके लिये हमें सबसे गरीब व्यक्ति के बारे में सोचना चाहिये क्योंकि परिग्रह (धन-संचय) एक प्रकार की हिंसा है। गाँधी के इस विचार से निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं—

* आवश्यकता से अधिक धन पूँजीपतियों के पास एक धरोहर के रूप में होगा।
* पूँजीपति इसका मालिक नहीं बल्कि एक न्यासी होगा।
* इस संरक्षक का जनता के सिवा कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा।
* इस सिद्धान्त द्वारा वर्ग-विभाजन को नहीं बल्कि वर्ग-संघर्ष समाप्त हो सकेगा।
* वर्ग-विभाजन होगा किन्तु वह लम्बवत न होकर क्षैतिज होगा अर्थात सबों को प्रतिष्ठा और महत्त्व मिलेगा।

→ इस प्रकार गाँधी द्वारा विकसित न्यासिता

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त वह सूत्र है जिसके द्वारा वे उस समस्या का निराकरण करना चाहते थे जो राष्ट्रीय धन के वितरण के अन्यायपूर्ण विषमता से हो गई है और जिसके निराकरण के बाद पूँजीवादी एवं समष्टिवादी दोषों का स्वतः अपलाप हो जायेगा तथा सम्पत्ति, उत्पादन एवं उपभोग की वस्तुओं के वितरण में कोई विरोध नहीं रह जायेगा और इस कथन कि 'सर्वे भूमि गोपाल की' का आदर्श चरितार्थ होगा।

→ गाँधी का न्यासिता सिद्धान्त अमीरों एवं राजाओं को लूटना व महाराजा एक दरिद्रता का जीवन बसर करे — यह नहीं है बल्कि गाँधी का विचार है कि वे स्वेच्छा से इसके स्वामित्व का त्याग कर दे और वे अपने संपत्ति का ट्रस्टी मात्र माने।

→ महात्मा गाँधी एक नेतृत्वकर्ता मात्र नहीं थे, आर्थिक विषमता की समाप्ति एवं जन-मानस की विभिन्न समस्याओं के निराकरण सम्बन्धी उनके विचार समस्याओं के स्थायी समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है।

→ गाँधी का मानना है कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य गरीबी मिटाना, सदाचार की भावना का सृजन करना, सामाजिक बुराईयों को दूर करना और संतुलित विकास करना है। इसका उद्देश्य यह नहीं है कि गरीबी और अमीरी की खाई बढ़ जाये, इसलिये उन्होंने भौतिक आध्यात्मवाद को महत्व दिया। ~~और अमीरी~~

Scanned with CamScanner